मानिलै डानि

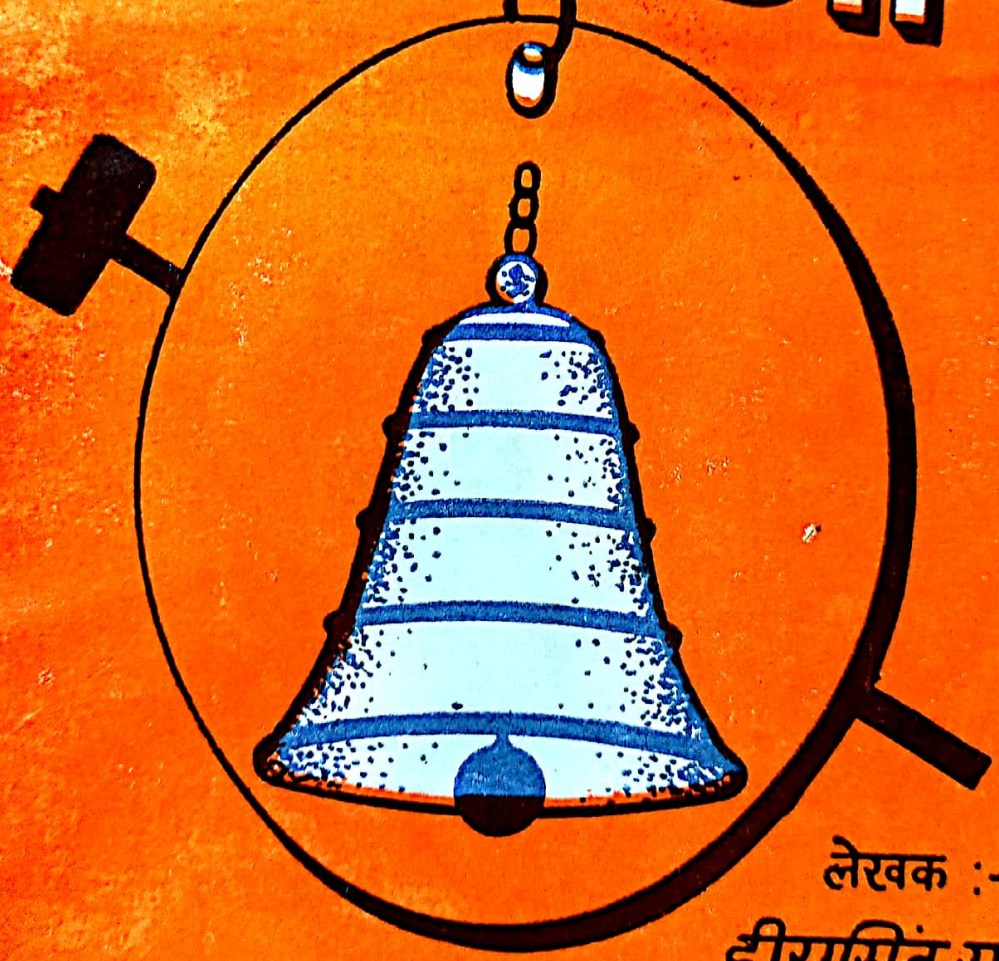

लेखक :--
हीरासिंह राणा

प्रकाशकः—
मानिला महाविद्यालय निर्माण समिति
[पंजीकृत] दिल्ली

Scanned with CamScanner

मनिलै डानि

[कुमाऊँनी कविता में]

(एक एतिहासिक भौगौलिक तथा सामाजिक परिचय)

[प्रथम भाग]

रचियताः—

हीरा सिंह राणा

प्रकाशकः—

मानिला महाविद्यालय निर्माण समिति

[पंजीकृत] दिल्ली

Scanned with CamScanner

© लेखक :
हीरासिंह राणा

आवरण शिल्पी :

मूल्य १.५० पै० (एक रुपया पचास पैसे)
प्रथम संस्करण ४०००० १९७६

प्रकाशक :
मानिला महाविद्यालय निर्माण समिति (पं०) दिल्ली

मुद्रक :
कुमाऊंनी साहित्य मुद्रक दिल्ली

Scanned with CamScanner

बौज्यू !

आपणि 'पुन्य स्मृति' में अपणै पुण्य प्रतापैल
म्यर युँ गीत उन् सब महापुरुषों हैं
समर्पित छैं, जनुल 'मानिलै डन्'
में इस्कूल बाटिकौ थान
तक, आपणि 'के'
लै मधत भेट
चड़ै रै !

बौज्यू ! तुम द्यप्त छिया।
द्यप्ता ! धरतिम काँ रनी ?
गीत ! मानिल डानिका
पड़िला ! जो ज्यौन रहनि !

डनै स्यालदे
२४ अप्रैल १९७६

आपौण ! गिदार च्यौल
हिरू···!
(हीरासिंह राणा)

Scanned with CamScanner

मिट्टी का मोह

अपनी धरती और अपनी मिट्टी सब को प्यारी लगती है। श्री हीरासिह राणा ने भी 'मानिलै डानि' में इस बात को सिद्ध किया है। पर्वतीय सौंदर्य सभी को आकर्षक लगता है फिर जिसका उस सौंदर्य से दूध का नाता हो वह तो उसकी याद में घुलता रहता है। वहीं जनमे वहीं पले और 'आ होली से लेकर झोड़ों के झमाके' तक सब कुछ गाया। आज दिल्ली के जीवन में भी मन न रुका तो उड़ चला मानिला और लिख दी यह पुस्तक जो हमें भी थोड़ी देर के लिए उस सुरम्य और शान्त स्थली की ओर ले जाती है।

बधाई है राणा जी इस पुस्तक के लिए। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पाठक इसकी सरसता का आनन्द लेंगे।

सफलता की कामना करते हुए मेरी शुभ कामनाएं।

डा० नारायण दत्त पालीवाल

स्मृति

श्री हीरासिह राणा जी द्वारा रचित 'मानिले डानि' नामक पुस्तिका का प्रकाशन "मानिला महाविद्यालय निर्माण समिति" द्वारा होने जा रहा है यह जानकर मुझे महान खुशी हुई है। इस रचना के लिए राणा जी की प्रखर बुद्धि और इनके महान तप-त्याग की भूरी भूरी प्रशंसा करता हूँ। १९४८. ४९ में स्थापित मानिला हाई स्कूल निर्माण कमेटी (दिल्ली) में मुझे प्रारम्भ से सन् १९५७ तक मुख्य सचिव के रूप में सेवा का अवसर मिला है। उन अनगिनत सहयोगी बन्धुओं का जिन्होंने प्रारम्भ से लेकर आज तक तन, मन, धन से इस

Scanned with CamScanner

विद्यालय को यथाशक्ति सहयोग दिया है उनका हार्दिक धन्यवाद करता हूं तथा जो सहयोगी आज हमारे बीच नहीं हैं उन्हें अपनी श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ।

अन्त में मानिला के पूर्ण परिचय के साथ साथ स्वयं अपना भी पूर्व परिचय कविता में पिरोकर सुन्दर जन जागरण के लिए राणा जी को तथा प्रकाशन के लिए समिति का बहुत बहुत धन्यवाद करता हूँ जो अब निरन्तर महाविद्यालय के निर्माणार्थ अग्रसर है।

कमल सिंह बसनाल बिष्ट (बेल्टी)

—:●:—

मानिला

पर्वतराज हिमालय के अंचल में बसा हुआ मानिला प्राकृतिक सुषमा का अक्षय भण्डार है। प्रातः कालीन सूर्य की सुनहरी किरणें, सायंकालीन अस्तांचल की लालिमा यहाँ के चित्ताकर्षक दृश्यों का श्रृंगार करती है। यहाँ के मनोरम दृश्य, मधुर वायु जन जन के मानस को आनन्द विभोर कर देती है।

मानिला का शाब्दिक अर्थ म+अनिल अर्थात मधुर—वायु या मलय समीर है। मधुर वायु एवं अनुपम दृश्यों से यहाँ की प्रकृतिक छटा द्विगुणित हो जाती हैं।

Scanned with CamScanner

ऐसे प्राकृतिक सौदर्य से भरपूर सुरम्य स्थल 'मानिला' में कुमाऊँ के लोकप्रिय कलाकार श्री हीरासिंह राणा जी का जन्म हुआ। प्रकृति के इस सुरम्य गोद में कवि का बचपन बीता। वहीं निन्तर प्रकृति देवी का अवलोकन करने के फलस्वरूप वहाँ के रम्य वातारवरण में आपके अन्दर कविता की प्रेरणा जागृत हुई।

प्रस्तुत पुस्तक "मानिला डानि" कुमाऊनी साहित्य में श्री राणा जी की एक अद्वितीय रचना है। जो मानिला के अनुपम प्राकृतिक सौदर्य कवि हृदय के महान उद्गारों एवं राणा जी के कोकिल कण्ठ से एक जगमगाता हुआ 'हीरा' के समान जन-जन के हृदय को अवलोकित करता रहेगा।

प्रस्तुत काव्य में श्री राणा जी ने कुमाउंनी लोक भाषा में मानिला की प्राकृतिक छटा, वहाँ की भौगोलिक एवं सामाजिक परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण किया है जिनसे उनका निरन्तर सम्बन्ध रहा है।

मल्ली व तल्ली मानिला के दोनों पवित्र मन्दिरों के मध्य 'मनिला इण्टर कालेज' विद्यमान है। इसका कवि ने अपने शब्दों में में बड़ा सुन्दर वर्णन किया है यथा।

द्वी थानों का बीचों बीच, यौ रुपसा डानि।
एकम सरस्वती रैंछ एकमा भवानी॥

सचिव
मानिला महाविद्यालय निर्माण समिति

Scanned with CamScanner

निवेदन

प्रस्तुत पुस्तक 'मानिलै डानि' कुमाऊनी रचनाओं में श्री हीरासिंह राणा जी की एक सुन्दर रचना है जिसमें मानिला के अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य का यर्थात चित्रण किया गया है। पुस्तक का प्रकाशन मानिला में महाविद्यालय के निर्माणाथ आर्थिक सहायता एवं जन जागृति के लिए किया है।

इसी मानिला 'महाविद्यालय' के निर्माणार्थ यह संस्था दिल्ली एवं मानिला में कार्य कर रही है जिसमें अपना अमूल्य सहयोग देने वाले क्षेत्रीय पट्टियों के दिल्ली स्थित प्रवासी ही नही बल्कि अन्य क्षेत्रों के समाज सेवी सज्जन भी सम्मिलित हैं। चूंकि राणा जी इसी मानिला के प्रारम्भिक छात्र भी रहे हैं इसलिए पुस्तक में राणा जी ने विद्यालय तथा क्षत्र से सम्वन्धित सभी सहयोगी सज्जनों का अपनी भावनाओं से नामोल्लेख किया है यदि भूल से किसी सक्रिय सहयोगी का नाम छूट गया हैं तो लेखक तथा प्रकाशक दोनों क्षमा प्रार्थी हैं और निवेदन करते हैं कि वे सज्जन इस सम्बन्ध में प्रकाशक से सम्पर्क करें जिससे हम सभी सदस्यगण द्वितीय भाग में उसकी पूर्ति कर सकें।

हमें पूर्ण आशा है कि प्रस्तुत पुस्तक पाठकों तथा मानिला महाविद्यालय से सम्बन्धित महानुभावों का मनोरंजन करने में समर्थ सिद्ध होगी।

धन्यवाद

विनीत :

समस्त सदस्य गण

मानिला महाविद्यालय

निर्माण समिति दिल्ली

Scanned with CamScanner

द्वी आँखर

पाठक ! भाई-बैणियौ, नन्-छना बै मानिलै डानि हियन छौ। अब सबुकै सामणि छौ। सबों हैबेर पैल्ली मैं उ ! शक्ति कैं प्रणाम करुनूं, जैल हियक भावना कैं कलम में धरणै कि शक्ति दी। वीक बाद बौज्यूक ! पुण्य प्रताप हैं नत्मस्तक छौं जनरि प्रेरणा और आशिर्वादैल म्येरि यौ रचना आपू लोगनाक सामणि ऐ सकी। डा० नारायण दत्त पालीवाल ज्यू, श्री बी. आर. टम्टा ज्यू, और वेल्डिक कमलसिंह बसनाल बिष्ट ज्युक आशीर्वाद तैं मैं भौत कृतज्ञ छौ। मानिला इण्टर कौलेज क व्यवस्थापक प्रधानाचार्य गुरुजन, तथा विद्यार्थी लोगोंक लै मैं भौत ऋणि छौं जनुल मकैं पुस्तक रचना काल में अपार स्नेह देछ।

जो भुग्गि तब मैंल युँ आँखर लिपि बद्ध करी श्री प्रताप नेगी ज्युक साथ-साथ मैं बी. बी. जे. जे. कैम्पक प्रधान सत्य प्रकाश ढोंडियाल, सचिव बचीसिंह कुंवारबी (बची सैब जोकर) और श्री गोबिन्द शाही, जैल ल्यखण बटि छपण तक मकैं द्वी गास पकै बेर खवा, तथा डोटल गांव नवयुवक सेवा समिति दिल्ली (कैड़ारौ) क वगदा ! प्रताप शाही ज्यू माध्यमैल मैं सबुकैं भौत एहसान मन्द छौ।

अन्त में "मानिला महाविद्यालय निर्माण समिति दिल्ली" (उपसमिति) मानिला प्रधान ज्यु, मु० सचिव, ज्युक साथ-साथ सब्बै सहयोगी सदस्योंक मैं भौत्तै कृतज्ञ छौं जनुल येक प्रकाशन व्यवस्था करि बेर म्यर भावना क फूलौं कैं आपण थान में महाविद्यालय प्रचारार्थ उपयुक्त समजि बेर ठौर दी। सबै सहयोगी गणमान्य लोग जैक जिक्र यौ किताब मैं ऐरौ उनर साथ-साथ श्री चिन्तामणि पालीवाल ज्यू तथा पुरुषोत्तम पालीवाल जनुल एकि मुद्रण व्यवस्था करी, भुला शंकर-भारद्वाज ! मैं सबुकै हार्दिक धन्यवाद करते हुए, छिमा चानू छिमा करिया, जेलै मैंल आपणि अदप की बुद्धिल ल्यखौ, ल्यख लगया।

श्रद्धा नत

❀ बिन्ति ❀

म्यर मानिलै डानि, हम त्येरी बल्याई ल्युँल ।
तु भगपति छै भवानी, हम त्येरि बल्याई ल्युँल ॥

ककलासौं बासोट नौला, बिनैका उछाणी ।
दुनगिरी नैधण पाली, पूरब उज्याणी ।
खुट धुँछ गंगा कौ पाणी, हम त्येरी बल्याई ल्युँल···।

पच्छिमै सरद पारी, गढ़वालौ दुसाना,
धूमाकोट दिवायला, गुलारका डाना,
यांक वीर सल्टिया मानी, हम त्येरी बल्याई ल्युल···॥

तलि पुजी भुमियैं थान, हरु हीतै थात ।
डडुला चमकन् क्वैराला, हैणमानुरा माथ ।
सगनण सदर आनी, हम त्येरि बल्याई ल्युंल···॥

मलि पुजिया पचपौला, जौरासी देवाट ।
गुमुटी मटेला स्यालदे चौकोटै की फाट ।
डानी सब त्यकणि चानी, हम त्येरि बल्याई ल्युँल···॥

Scanned with CamScanner

द्वी थानौं का बीचों बीच यौ रुपसा डानी।
एकमा सरस्वती रैंछ, एकमा भवानी।
गर्जनि घनैला! घानी, हम त्येरी बल्याई ल्युँल...॥

इन्टरा करौछ त्वीलै 'काठौं' कौ इस्कूल।
'डिगरी कौलेज' देवी ख्यलौं हरौ भूल।
सब नन् चैरई नानी, हम त्येरी बल्याई ल्युँल...॥

मैं छौ 'हिरू' डढोई कौ पीड़ै की गढोई।
त्यर खुटां तब ल्यै रौं पीड़ै कै बटोई।
मेरि 'बिन्ति' जये मानी, हम त्येरि बल्याई ल्युँल...॥

❀ तल मानिल सदर ❀

पालि पछौं ! में छौ ! मानिलै डानी ।
यां ! रैंछ 'दुरुग' देवी भवानी ॥
द्वी थान ! देवी भवानिक यां छैं ।
थानों कैं भेटण चौ - गोंका आनी ॥ पाली पछौं···।॥

* * *

पड़नि - सुणनि जो यौ किताब ।
ऊं सब लोग जो पड़िला आब ॥
भूल चूक मेरि, कै दिया माफ ।
"राणा" सबों हणि ढोक ! नवानी ॥ पाली पछौं···।॥

* * *

तलि बै रामगंग खुटा धुनैं जैं ।
चरि गुलारक धुरा मली छैं ।
चौतरफां 'मानिला' गाड़ी चली छैं ।
यां हौयूँ दैद ! मैं तब-शोर आनी ॥ पाली पछौं···।॥

Scanned with CamScanner

चार पट्टि सल्टक द्वी पट्टि नया ।
तीन पट्टि चौकोट कड्ल सौं तया ।
गढ़वाल हनर - किनर हया ।
सबै यौ छाया कि आशीष पानी ।। पाली पछौ···।।

* * *

पार उछ ! राणखेत यौं ! स्योंनी धुरा ।
यौ छा यौं ! नैधण उ ! छा ! बिन्सरा ।
कपोली छिनै कैं देखौ धैं जरा ।
तौ ! देखौ भौनखाल नैनतालै डानी ।। पाली पछौं···।।

* * *

तौ ! गाड़ा किनर जैनलै 'पूवा' ।
ये बाटी में गोछी हीत 'हरुवा' ।
उ सनणा पलदन वै केदारै पूवा ।
शिवज्यू ! बुड़ केदार 'पुन्यों' मनानी ।। पाली पछौ···।।

* * *

चौखुटी-गेवाड़ वाँ ! छू द्वरहाट ।
जो छी कत्यूरों कि रंगिली वैराठ ।
भतरौजा ढै ! पलि सिलोरैं फाट ।
तो ! भिक्यासैणम त्रिवेणी न्हानी ।। पाली पछौ···

पण्डवों युगौक देवी कौ थान ।
यौ ! मानिल देविक पुराण स्थान ।
बजौ का लखच्चर छैं भाग्यवान ।
जो रोज्जैं ऐ बेर फूल चड़ानी ।। पाली पछौ···

* * *

लगौनी मगर बात छू संच्ची ।
पैल्ली बै भगवति धात लगौंछी ।
ज्य माङ इनुल से देवि द्योंछी ।
जै दिन बै निसुणि अब पछतानी ।। पाली पछौ···

* * *

डनै कि 'स्याल्दे' यां कौतिक हौंछ ।
नौ–पट्यो कौतक्यार देखै हैं औंछ ।
धाम अछाण लै खुब्बै जमौंछ ।
'खुमुक' पड़िया सब्बै न्है जानी ।। पाली पछौ···

* * *

'कौतिकौ थौ' मैल ये थौ में ल्यौखौ ।
'प्योली बुरांस' में उकणि द्यखौ ।
यौ थौ लै जुगां बै आपू कै स्यकौ ।
जो भागी बंचनि भेट ! कैं जानी ।। पाली पछौ···

थानक तली बै चौनौंक भिमी।
भगवती दगड़ भौत्तै छू ढिमी।
दूद हौं भैसौक एक कसिनी।
साधु! वै जातुरि कतु पिजानी॥ पाली पछौ...

* * *

थानक तरुब दुकानों पुठौ।
यौ भिमि दा आब कसिक उठौ।
नन्तर थान! कैं माया न! चुटौ।
हांजरी भरै हैं रोज्जै ऐ जानी॥ पाली पछौं...॥

* * *

चावौ याँ बै जब सब वार पा पार।
क्य भौल मान्यौछ भौतै पिंयार।
तलीबै कुन्हीलौक गौ छू जिहार।
'दिवानी विनोद' एत्ति गहानी॥ पाली पछौ...॥

* * *

ऐ गों कै उमरावसिंह ज्यू छैं नेक।
यां कै छी दीवानी गायक एक।
बरकिना रुपसिंह नेता ज्यू नेक।
मानौ क्वे न मानौ सांची लगानी॥ पाली पछौ...॥

यौ गैरी ! छिड़ड डंगसरू गौं की ।
मानियां व्यकदार मनुस्यों का जोगी ।
सगनणा 'रजदा' लैं व्यकदारी रोगी ।
रोग कटैं हणि किर्तन गहानी ॥ पाली पछौ···॥

* * *

यां कै 'तिलुदा' छैं मैडिन्स मजी ।
मोहन दा ! खायोंक दगड़िया हँची ।
ज्वहारि दा ! इनु हैं नोटों की गच्छी ।
डिल्ली बै 'बिलैंत' हप्तम् जानी ॥ पाली पछौं···॥

* * *

सगनण माधो सिंह एक भगता ।
'स्यालदे' में प्याऊ की करनीं जुगुता ।
मन्दिर बै इस्कूल तक भौत कै मधता ।
पाँच भयों मजि 'फक्कड़' कवानी ॥ पाली पछौ···॥

* * *

बागा नौ तली बै सदर आंछा !
यां बादौ 'केशवदत्त' रुपयों फांचा ।
बौज्यू कान्तमणि ठुल सेटों माजा ।
दिल्लां में भाविण काग ! उड़ानी ॥ पाली पछौं···॥

यौ सारै गरखौक बाजार सदर ।
यां रैछ बिस्कुटा बिड़िकि झर-फर ।
पच्चीसों दुकान इनर – किनर ।
येकणि देखैं हैं कां-कां बै आनी ।। पाली पछौ…॥

* * *

यां दुकानदारोंक 'स्यौदी' रुपैं छैं ।
सैण मानुर मन्डावों 'कुदुर' कांछैं ।।
पाली नैलावोंक अंग्वछ यां ! छैं ।
ग्योंनू में घूण क्या ! ढुङ्ग बेची जानी ।। पाली पछौं…॥

* * *

भोलादत्त 'बिड़ि' खानी केशवदत्त बिस्कुट ।
खरटा परतापगिरि क्य चानी चुट चुट ।
कन्गड़ी अम्बीदाक थाकी गई खुट ।
कुन्दनसिंह पालिधार बै यकलै आनी ।। पालि पछौं ।।

* * *

यौ आयौ क्वैरला चम्खला तल दन् ।
मैनेजर इस्कूलक लुरदेव यपन ।
नन्दाबल्लभ ज्यु यां भल प्रिंसिपल छन ।
है रै इन्टरै कि सानी गुमानी ।। पाली पछौं

'मजिगों' भगत सिंह मैहरा कैं सुरी ।
म्येरि छापौ किताब पदम पुरी ।
टोका राम पन्त हैं रैंछा कुटुरी ।
धाम सिंह ज्यू कैकणि धात लगानी ।। पाली पछौं···।।

* * *

राम लछीमन बची लछिया ।
डभर बै पड़हैं मानिल अँछिया ।
क्वैरल 'देवसिंह जोकर' रंछिया ।
'इड़ा गोपाल कैं अब कब बुलानी ।। पाली पछौं···।।

* * *

बिनोली रणकुन डंगुला चमकन् ।
बगिछ नयेड़ छतेड़ा तलदन् ।
लकड़ां हैं तल देशी जब अनि मलडन् ।
सारै डनै कणि गीदुल गजानी ।। पाली पछौं···।।

* * *

भल मैंसौ ! कौतिक होनै रहया ।
युँ जगा थड़ - थई एत्ति रै गया ।।
को एति क्य न्याय क्य जै लिगया ।।
तू एक अमर ! छै ये भवानी ।। पाली पछौं···।।

इस्कूलक इनर-किनर

यौ ! द्यखौ बिष्टुकौ बौराणी ! खत्ता ।
नगतुरा तलिसिम् पुरिया चौं मथ्या ।
तो ! देखौ गंगा जी जैं काशी तका ।
सैणै कि 'स्यौरात' कां-कां बै आनी ।। पाली···

* * *

कुणाधार मथ्या युँ चार दुकान ।
भोल दत्त, 'भट्ट' ज्यू और चौहान ।
चण खाणा आनी याँ इस्कूली नान ।
त्रिलोचन लखचौरा पल्टुक बुलानी ।। पाली···

* * *

कुण धारा 'अपर' क्य कौं सकरा ।
बार खड़ी पहाड़ यां पड़ी म्याग ।
यौं जोड़ी भावना छैं त्यरै ! भरा ।
नारायणदत्त पंडित ज्यू ! याद ऐ जानी ।। पाली पछौ··

Scanned with CamScanner

देवदत्त ज्यू दुकान अपर किनरा ।
नन्दराम पंडित ज्यू भैं छें इनरा ।
किसरि टमट रिभई घरा ।
च्यौंची दा यपनै 'डाला' वनानी ॥ पाली पछौ···

* * *

यौ खत्ता ! वार बै मनूस्यौं का रौनी ।
मोतिसिंह पेशकार सिमली में औनी ।
प्रतापसिंह सरपंच यादै रौहौंनी ।
गौ सभा नैलाव 'देबदत्त' सज्यानी ॥ पाली पौछ···

* * *

नगारी खत्ता यौ खइ खइ पाथरि ।
गुन्दीदा चौंरी ढै फुलिछ हांजरी ।
तो देखौ बुंगौ ढै गांहरौ चांचरि ।
यौं गौं इस्कूलक किनर आनी ॥ पाली पौछ···

* * *

थापी रौ थान जो इस्कूल वार ।
श्री बर्मा ज्यू की छौ श्रद्धा ईपार ।
पाणिक धर ! कणि देवी का द्वार ।
मुरिदा लै खोली रैं भोल कौ भवानी ॥ पाली पछौ···

हे भगवती म्यर जोड़ी छैं हाथ।
तु छाया करिये इलाका माथ।
हे देवी ते बिनैं हम छौं अनाथ।
दि दियौ जो यौं जे मांगण आनी॥ पाली पछौं…॥

Scanned with CamScanner

काठौ तब्यौल
'नौं' इस्कूल ...

कठपती बै चल् जो डानी डानी।
औं रय हैंसनै नन् और नानी।
पुराणि फामैं ल मैं गौयो सानी।
इस्कूलमा सब आनी न्है जानी ।। पाली पछौ...

* * *

डानिका बीचम भारी इस्कूल।
लम्बी छु कहाणि आपू बतूँल।
'नौल क' हरदत्त मठपाल ज्यूल।
एकी सै धरिछ लोग कां! जानी। पाली पछौ...

* * * *

सन् उन्नीसा सौ अट्ठाइस बीचा।
मिडिल इस्कूलैकि नीव पड़ी छा।
तै दिना बै आजैकि यौ शुभ घड़ी छा।
हिरदा! जै घड़ि मज कलमा उठानी ।। पाली पछौ...

Scanned with CamScanner

माथक फिल्डम्बै द्यखो इस्कूल ।
टीनों की चमक क्यार्यों में फूल ।
ख्यलूँ छी कै दिन यां एँबै भूल ।
अबा ! नभर उ भूल ! निआनी ।। पाली पछौ···।।

* * *

माटौ उठै बेर टिकौ लगायौ ।
युँ अँख देखण त्वील सिकायौ ।
त्वीलै पहाड़ बै देश दिखायौ ।
क्य चड़ौं त्यकणि हे महादानी ।। पाली पछौ···।।

* * *

भौतै फुली त्यर कोखम फूल ।
पैली भवयैंछै तु हरदत्त ज्यूल ।
दानम् दि जग कुण धर्यु ल ।
सारै इलाकम बाजींगे घानी ।। पाली पछौ···।।

* * *

'मठपाल' ज्यु पछिल इलाक बल ।
सरस्वती थानै कैं थापें हैं चल ।
पैल्ली बणाई यां 'काठा-तब्यल' ।
म्यटिछ म्यटोंण 'मौ' अनमानी ।। पाली पछौ···।।

Scanned with CamScanner

ध्यौ पन म्यटौण दिल्लिम चन्द ।
रामलिला कौणौक लगायौ जन्त ।
देवी कि किरपा लै हौ यौस चन्द ।
तबबै आज तक 'लीला' चलानी । पाली पछौ···॥

* * *

सन पचपन वटि लै गौ छियात्तर ।
लीला में कमाई 'द्वी लाख' हृयर-फ्यर ।
नरपतसिंह, पानसिंह 'भट्ट' ज्यू कैंश्यर ।
कै-कै नौ लेखों मैं भगवति ज्याणी ॥ पाली पछौं···॥

* * *

'किथिं कल्याणु' कि छि एक जोड़ी ।
जो इस्कूलै हैणि दिन रात दौड़ी ।
हया समर्पित ! न्है गया ! छोड़ी ।
'रमण' ज्यू दाड़ि भुली निजानी ॥ पाली पछौं···॥

* * *

ऊम्मेदसिंह मनराल सयणामानुरो ।
इनरी जगम जग निपुरी ।
रामलिल समितिक यु' ! छिया धुरी ।
कै दिन ! कौं छी हम प्रैस चलानी ॥ पाली पछौं···॥

एक-एक कौने गय भार उठाणी ॥
थ्वड़ भौत्तै रै गय लीला चलाणी ॥
बेल्डी कमलसिंह ज्यु ! की छि बाणी ।
न्है जानी मनख लीला नि जानी ॥ पाली पछौ···॥

* * *

उमापती ज्यू कैणि छांटों ! प्रधान ॥
सैकुड़ प्रतापसिंह बगार्यों ज्वान ॥
रैजै हमों कैणि बाटी दिखानी ॥
जै ! हो उनरि जैल कै कुर्बानी ॥ पाली पछौ···॥

* * *

कुणधार भट्ट ज्यू गोपाल दत्त ।
दगड़यौं का जाणैल छैं भरमत्त ॥
दाड़ी धरी हैछ दगड़यों निमत्त ।
बाच लुकै हैछ ज्य कैं ! भवानी ॥ पाली पछौं···॥

* * *

परतापसिंह मन राल 'धौराड़ो' रणी ।
नौला पुरणा में मेला करणी ।
के कौं दामोदर 'शास्त्री ज्यू हंणी ।
लीला में आजिलै 'शंख' बजानी ॥ पाली पछौ···॥

माधोराम महन्त, 'डुंगरौ' नरि दा ।
'चम्कना' टन्डन वजौं बचीदा ।
उम्मर भरि लीला की सेवा करीछा ।
अब नन आपू हैणि 'ढोक' नवानी ।। पाली पछौं···।।

* * *

सिमका खिमसिंह बंगारी एक ।
कलकत्त रै वै लै काम कैं नेक ।
इस्कूलक निर्माता यौ लै छैं एक ।
अब रामनगरम होटल चलानी ।। पाली पछौ···।।

* * *

गंगासिंह माहोड़ी गोधनसिंह तड़ागि ।
शंकर दत्त पपनै ज्य, मेकप में छैं रागि ।
मनखै कैं बान्हर बनौनी जै लागि ।
डाइरेक्टर 'अनदा' कैं रावण ! बनानी ।। पाली पछौ···।।

* * *

लीलाक कलाकारों सहयोग भारी ।
जन्ता जाधे हैंछ इन लोगों पारी ।
सब कौंनी अभिनय छाजौं ! कैपारी ।
कल्याणसिंह 'रावण' बाज्जै है पानी ।। पाली पछौ—।।

Scanned with CamScanner

'शंकर उप्रेति' बटि राम है गो 'बाली ।
टंडन ज्यू बतिक मथुरा 'ग्वाली ।
पुर नौ पै लेखुल जब माड आली ।
'लिलदा' कै सुलकणि मौत्तै बजानी ।। पाली पछौ...॥

* * *

ये मानिलैं डानि का छी निवासी ।
संगीता पंडित "भज्जू मिराशी" ।
पीर बगसा ज्यू गई उदासी ।
फिर लै ! संगीतक छैं बड़ ज्ञानी ।। पाली पछौं...॥

* * *

बाबा ज्यू 'नौलक' श्री खेमानाथ ।
उपनाम इनौर 'गमाली' नाथ ।
पहाड़म रामलिल कै शुरूवाद ।।
जे - लै हौय बाबा ज्यू नामै कमानी ।।पाली पछौं...॥

* * *

हीरा सिंह राना ज्यू प्रिन्सक मैनेजर ।
मोतिया ढ्यांगा कैं गहानो सकर ।।
लीला में सहयोग रौंछ बराबर ।
हय कलाकार धौ मूडम आनी ।। पाली पछौं...॥

मरोपि दा गोपालसिंह ! जातुरि पटयौनी ।
क्वे ! जब निमिला तौ मैंकैं बुलौनी ॥
जहिंयै लै भेटनि तहियै कै द्यौनी ।
सुण ! श्यवा गीद रे यसिकै म्यसानी ॥ पाली पछौ···॥

* * *

जै दिन बै इस्कोलौ कार चलौछा ।
इस्कूल लिजिया जे - जैल - कौछा ।
मैंल सब्बै लोगों कौ नौ लेखि रौछा ॥
द्वहरि किताबम पुरि द्युल कहाणी ॥ पाली पछौ···॥

* * *

मिडिला तब्यल 'इन्टर बनीगी ।
'डिग्री कौलेजक' शंखा फुकिगी !
सिमली कमलसिंह ज्यू नेता चुनिगीं ।
'राष्ट्रपति' मैडल अलगै लगानी ॥ पाली पछौ···

* * *

नौली समिति क कार्य कारिणी ।
बद्री दत्त जसोदसिंह ! मंत्री द्वी झणी ।
केशवदत्त खिमानंद छैं 'पैंस' बोकणी ।
कय गाड़ गंगा जी क्य काम आनी ॥ पाली पछौ···॥

यौ महिला वर्षम् द्वी महिला लै ऐगीं ।
श्रीमती 'इलापन्त' संरक्षक हैगीं ॥
इलाका नान्यों में गोविन्दी देवीं ।
कुंवर दा ! भतिजि ! उमेद दा नानी ॥ पाली पछौ···॥

* * *

दीवानसिंह बोराज्यू हीरासिंह चौहाना ।
बचेसिंह भन्डारी लीला की ज्याना ।
गंगासिंह-विरि-बंगारी बचेसिंह राना ।
द्वी-द्वी हजारौक चन्द कटानी ॥ पाली पछौ···॥

* * *

भैंस खेत झिप में मोहौनैं-मोहन ।
सिम्भावली वली मज नेग्यों कौ सोबन ।
'शारदा प्रसाद' लीला का जोभन ।
दानिदा कफैल्टक खालि टोपि लगानी ॥ पाली पछौ···॥

* * *

जसबन्तसिंह सूरजसिंह करनी वकालत ।
पुछि ल्यौ इनूहैंणि कां छैं अदालत ।
लीला में जब आनी तब द्यखौ हालत ।
भाषण जो दिण भैटिल फिरि कां चुपानी ॥ पालि पछौं ॥

'आतृ मण्डल' क उम्मेरसिंह रावत ।
'मिठ' बुलैं मंचम करनी जो स्वागत ।
रैं जो 'मानिल' में यौ आवत-जावत ।
चौकोटी कन्ध में कन्ध मिलानी ।। पाली पछौं···।।

* * *

अबका सहयोगी जुटि रैं सबा ।
चेती रैं उत्साही लीला में अबा !
यौ साल रामलिल करिछ तवा ।
ऐलबेर गजबै चन्द बतानी ।। पाली पछौ ।।

* * *

नौ एक हजार पैल्लि कै हैगी ।
पन्दर एक हजार यौ साल ऐंगीं ।
उत्साह सबौंका दुगुणा हैगीं ।
माधोसिंह बेल्डिक खाल्लि रिसानी ।। पाली पछौ···।।

* * *

इलका ननतिन पुरणा-नौल ।
कौलेज कैं अब जल्दि बणौंल ।
मैंनजर मंगल सिंह ज्यू हैं कौल ।
उट्टौ बाज्जै च्यल नाम, कमानी ।। प्राली पछौ···।।

जै दिन बै 'मैनजर' मंगलसिह आई ।
हरसाल एक-द्वि 'कम्र' बणाई ।
कौलेजैलै भल नम्बर पाई ।
थ्वड़ा पड़ी गुण जाधे बतानी ।। पाली पछौ ।।

* * *

बर्मा ज्यू नौ छा हो चिरंजीलाल
याँ छौं प्रिन्सीपल मैं आजकाल ।
यौ छू ! कौलेजौक उन्नतिकाल ।
अनुशासनौक पक्को छौं स्वाभिमानी ।। पाली पछौ ।।

* * *

बर्मा ज्यू आभारी हम छौं अपणा ।
पिछड़ि छू इलाक आपू सयणा ।
अध्यक्ष चनरसिंह पटवाल सगनणा ।
अपौण व्यक्तित्व 'उत्तम' बतानी ।। पाली पछौ ।।

* * *

श्री धरमदत्त बटि बर्मा सेबौल ।
जै लै कै मधत गुरु ! जनौल ।
भौत्तै छै दयादानि पैजै लेखौंल ।
सब जी रै जौ लोग इस्कूल चानी ।। पाली पछौ ।।

सल्टक सल्टिगा चौकोटा सयण ।
लागौ हता-हति कोलेज बनण ।
नया का भल् मैसो रुपैं छैं म्यटण ।
नेता कमलसिंह ज्यू आगिलबै जानी ॥ पाली पछौ—॥

● ● ●

बासोट बीनैक चौनइयां नौला ।
पालि बै मासि औनै गुमुटि जौंला ॥
भवानसिंह मियां कैं बात बतौंला ।
भ्रातृ मण्डललैल बात है मानी ॥ पाली पछौ···॥

● ● ●

पैंसिया वाँगिधार भिपा दिवैला ।
सोली - बै - सदर औंला क्वैरला ।
भिक्यासैण हरीश चन्द्र सिंह 'छैला' ।
दिखौंला सैन्टर मानिलै डानि ॥ पाली पछौ···॥

● ● ●

यौ दसौं पट्योंक ओरहन - पौरहन ।
डिग्री कौलेजैकि माँग कौ जोरम ।
'मुख्यमंत्री' ज्युल कौ समारोहम ।
शिक्षा में आगिलहौलि यौ डानी ॥ पाली पछौ ॥

● ● ●

अन्त में सबुहैं हात जोड़ी छैं ।
जन् सहयोग्यों ैल नाम छोड़ी छैं ।

द्विहरी किताब में सब्बै जोड़ी छैं।
एंल में माफि चान् सबुहैं डानी ॥ पाली पछौं ॥

✡ ✡ ✡

दिल्ली समीति और घरै कमेटी।
सब्बुलै मिलिबेर उन्नति मेटी।
हे! डानी अब मैल कलमा समेटी।
सैत! अब ते डानिका दिन आनी ॥ पाली पछौ ॥

✡ ✡ ✡

म्येरि डानि तब तक तु डानि रैली।
जब तक तू यकणि सम्पन्न नि कैली।
त्यर थानम् तब तक टन-टन रैली।
अब दया द्वारौ कैं खोला भवानी ॥ पाली पछौ ॥

✡ ✡ ✡

बनाणौ! यां अब 'डिग्री कौलेज'।
भगवती तु एकि 'सैंक्सना' भेज।
त्येरी दया हैंणि यौ चीज केछ।
'विश्व विद्यालय' कौली भवानी ॥ पाली पछौ ॥

✡ ✡ ✡

गुरूजन ननतिन सहयोगी सज्जन।
प्राइमरी-कौलेजम जो लै छैं यपन।
बुद्धि कैं शुद्ध कौ सरस्वति सनातन।
घर-वौणा बरकत द्यौ म्येरि भवानी। पाली पछौ ॥

रतखाल पन्

'बंग्यल' कैं तलि छौ रतखाल।
भलि हैगे रौनक यां अजकाल।
यां बेच्चों 'शौवक' दार हरसाल।
और ठुल काम छौ लिसै छिलानी॥ पाली पछौं...॥

यौ रतखाव हौं छी 'गिरि' पैली।
जो हारणी हय बाटंछी भेली।
पैंसी 'गमालुका' ध्यौं का जलेबी।
याद जनु कैं छा मिच चटचटानी॥ पाली पछौं...॥

यां लै रै योजना अस्पतालैं की।
रै है गे कसर ध्वड़ै सालैं की।
हैंच यौ 'इस्कीमा' पुरि जां लै की।
ज्याणि कतुक मरीज मथ्था! नहै जानी॥ पाली पछौं...॥

Scanned with CamScanner

'आदर्शै' गाडियोंक मोटरों अड्ड।
हयोनम रूड़िम एँ खटा-खट्ट।
चौमास क्या लागौं है जैं छ पट्ट।
अब ! कबा ! डामर ऐती बिछानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

जंगलाद पी० डब्ल्यू० डी० की झगड़ी।
तब्बै ! यां डामर रोड़ नि बणी।
जन्ता कैं है रै परे-शानी बड़ी।
गुप्ता ज्यू। बाद अब को यकैं चानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

'पुरखोत्तम उदान्त' ज्यु की दुकान,
भ्यार बै 'सूरी' दा ल्यै गो समान।
कै दिन कपड़ छी थानों-थान।
अब खाल्ली नन-तिन बत्ती जगानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

उद्यानन्द ज्यु कि छि यां भारी हाम।
इस्कूला कार्य कर्ताओं में नाम।
उधार लिजांणी खै गय गुदाम।
सामाजिक काममम आजि लै जानी ॥ पाली पछौं···॥

गुन्ठी दुकानम यौ को ! जमी छा ।
डढोई 'उमेदि' भलि चलि छा ।
मिठै बनणौक बड़े 'सल्लि' छा ।
पर ! यां ऐ बै सब नमकीनै खानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

तलिबै औरयौं को लबो-लबादा ।
खिड़िया बिड़िया तौला-पर्याता ।
उम्मेद दा दुकान ! चैं ! जिन्दाबादा ।
हौयै या निहौय लफाई जानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

गौरयौं 'अनूदा' कैं है रैछ जाग ।
कब आं उधारौक रूपैं अभाग ।
सुसैटी ! दगड़ भाल ग्यसां राग
कस्सै हैं अकाल ग्यौं-चाडौ खानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

अनुदा ! नौ-गांक-चौ-गांक कोछैं ।
फुक मैं-मुला छोड़ आप्फि रय जो छैं ।
सरकारि ! बि भागौंक बाबू-लोखा छैं ।
'लन्चम' कैं मेन्ट्री कौ हल्ला ! मचानी ॥ पाली पछौं···॥

सड़क है तल-दन जोगी दुकाना ।
दुकाना आगिल बांदी मचाना ।
यु' रामदत्तक खुलिरैं थाना ।
पैल्लि 'संज्याति' अब अलगै कमानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

को छा हो ! जोगिदा जो आरी चलामौ ।
चुपै-रौ चुपै-रौ पतरौल आमौ ।
न मुया अब यौ 'बोहौंल' पिहामौ ।
जोरैल नकौ यार कौ सानी-सानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

रामदत्तै आगिल च्यहा बनणी ।
रणौं कौ प्रहलाद लागौं मकणी ।
छवट भैं छौ मानसिंह गौं-गौं गहणी ।
यौं जाधे । चहा में कौफी मिलानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

को 'राणा' मुया ! तू कौस बुलां छै ।
वी राणा हिरू जो गीत गहां छै ।
कैं-कै बखा जो उ रेडू में जांछै ।
वीकै छै यौं भइया ! च्यहा बनानी ॥ पाली पछौं···॥

नौली दुकानौं क यौ कार-बारा।
'तुल राम' ननोकि बासी-सिमारा।
पुरुषोत्तम कप्पोटर 'माई' गिदारा।
'मैफल' जमी जब द्वीये भै गानी ॥ पाली पछौं...॥

● ● ●

यौं! बची पंडिता! भै धनीराम।
गल्ला सुसैटी कौ यौं कौंनी काम।
यां! छौ बैदांगी में अन्देबै! हाम।
डाक्टरों जमनम नाड़ी चहानी ॥ पाली पछौं...॥

● ● ●

'सल्ड्यौ' को रामूदा! च्यहा बणाछा।
भैसिया-बल्दिया ब्यौपारी ल्यांछा।
सबुकैं फोकट च्यहा प्यवांछा।
युं घाट खौ बै लै खुशि है जानी ॥ पाली पछौं...॥

● ● ●

किर्पाराम डाक्टर ज्यू! हैगि रिटैरा।
सेव-नारिंगौं का मारनि श्वैरा।
इनरा नन-तिन नेता छैं ख्वैरा।
हर-एक समस्या कैं जल्दि! निप्टानी ॥ पाली पछौं...॥

ठुल-बन्दों भंगा जो ट्यांगा लि जांरी ।
खत मजी रामलाल ! दुबाणौ हरी ! ।
झुसि दा ! पांछिल बटि बजां नफिरी ।
पड़्यौ में हरसाल मौ लगै आनी ॥ पाली पछौं...॥

● ● ●

तुम को छा खाटिम् दम कैं लगौंणी ।
दिवानि भाकुनि कुनी मिहौंणी ।
तुम छा जलेबिम 'कुड़ा' बनौंणी ।
ना ना भलस्यौ मैंस खाल्लि चलानी ॥ पाली पछौं...॥

● ● ●

'पोस्ट मास्टर' नरदा अय लटकानै भ्वौलौ ।
दब्बड़ अपौण डाकखाण ख्वौलौ ।
मैल कौय राम-राम नरदा कां बौलौ ।
जे लै हौय सेवा में टैमैल आनी । पाली पछौं...॥

● ● ●

'पैलाक ! हो शिवदत्त ! के लै रौ कार ।
बेचि गोंरे भुला ! किताबों पार ।
त्यौ रौ भुलिकौ छी ल्यखी उधार ।
कां छा उ ? क्या विकि चिट्ठि निआनी ॥ पाली पछौं...॥

भौन दत्त पैलागुन कां लुकि रौछा ।
सुणौं छ ! तुम भलि च्यहा बणौं छा ।
क्यलै नै-क्यलै नै संच्चि सुणौं छा ।
भिज पनि ढोंगाव म्यर-एत्ति आनी ।। पाली पछौं—।।

● ● ●

कौ ! मिस्टर राना आ यार भैट ।
लिजा अपणि यौ चिरिया पैन्ट ।
ओ ! मधीदा पार इतु न एँठ ।
नन-छना दगड़ी छै ! दया निआनी ।। पाली पछौ—।।

● ● ●

जाधे कौलै तौ में खत में न्है जोंला ।
तेरि चुकुलि मास्टर ! जोगराम हैं कौला ।
वासी सिमारक 'मुरिदा' हैं कौंला ।
जौ छैं इस्कोलक ढ्यकदार मानीं ।। पाली पछौ—।।

● ● ●

इन्द्रमणी च्यल लिल्दा बुड़िगीं ।
ठुलांक दगड़ बोरैं ठड़ी गीं ।
लैन्टरै बिल्डिग नौ छै खिड़की ।
म्यर ख्यालैल अबा यु 'चक्की' चलानी ।।पाली पछौ—।।

नाटक कला मजि मानी ! त्रिलोचन ।
टीका राम गहत्याड़ि ऐ ! गौं पना छन ।
ढै ! में धीन ! बाबा कि 'कुखड़ौ' की रन-मन ।
बाबा ज्यू इनर 'माइ' कुटी खानी ॥ पाली पछौं—॥

● ● ●

तो ! देखौ बसेड़ि ! मुशोली ढै छैं ।
कुंवर सिंह मनराल यां कै रैणी छैं ।
लछमसिंह अधिकारि ज्यू ! दगड़ि बणी छैं ।
'आदर्श' ! नौला कौ इस्कूल चलानी ॥ पाली पछौं—॥

● ● ●

बुंग धारा पानसिंह पार उढै ! रौनी ।
गजेसिंह पेशकार यां कै बतौनी ।
डौक्टर बंगारी ज्यू भौल ! नौ कमौनी ।
भिमसिंह पण्डित द्यप्तै ! कवानी ॥ पाली पछौं—॥

● ● ●

पटवारि ग्रामसेवक भैक्सीनेटर ज्यू ।
स्वास्थ्य विभागक इन्सीपैक्टर ज्यू ।
श्री डाक्टर सैवौक श्री कम्पोटर ज्यू ।
हिरदा ! सब्बौं कैणि मेरि-श्यौब ! लगानी ॥ पाली पछौं—॥

रत खाव पन सब्ब जैक नौंल्यखौ ।
चसै ल्यखौ मैल जां जौस द्यखौ ।
नौक निमानौण लगया ल्यखौ ।
सब्बुहैं ! सुफल है जो भवानी ॥ पालो पछौं···॥

[illegible]

Scanned with CamScanner

मल मानिल

डुट्याव

'मली' मानिलि हैं ज्वडुनू हात।
एकी पुराणी छौ सत्य कहात।
'तली' मानिलि कौ काटि बै हात।
चोरौं लै यां धरौ ! यौ-सै बतानी ।। पाली पछौं···॥

● ● ●

यां अब अष्टिमि कौतीक लागौं।
जैकणि जे-चैंछ-से चीज मांगौ।
गीत भवानिक ल्यखुहूँ गाँ हौं।
क्य बतौं ! महिमा ल्येखी निजानी। पाली पछौं···॥

● ● ●

पार उंच्चौ कैलाश ! अगास पार।
देखौ ! यौ दुनगिरि जौरासी धार।
'श्याल्दे' कौ बगड़ चौकोटै स्यार।
वां देखौ जां हंणि यु अंख चानी ॥ पाली पछौं···॥

Scanned with CamScanner

यौ द्यखौ 'डुट्याल' मारौ-नझरा ।
यौं छैं चौकोटम सुनक 'स्यरा' ।
पार उछ ! देधाट कतू ! सुन्दरा ।
तो ! देखौ भौन खाल नैणताले डानी ॥ पाली पछौं ...॥

● ● ●

यौ धुरै हैं कौंनी चरी गुलार ।
बवाड़ि-बलोदी यौ ढै किचार ।
रामदत्त बलोदी यां छैं जिहार ।
हीरासिंह क्वश्चौन कौंनी पधानी ॥ पाली पछौं ...॥

● ● ●

यौ छा हो ! पैंसिया यौ छौ झिमार ।
डाक्टर 'भगतदा' कौ पलटुक गुलार ।
यौ सारी फाट गे पारै कि धार ।
भल मेलों गौं पारै धारम बतानी ॥ पाली पछौं ...॥

● ● ●

टुल्गौंजो देखी मौ रंगिलि डढोइ छा ।
ओ ! हिरा यौ त्येरि जन्म भूमि छा ।
यौं बैं सिमइ तक चुलि-चुलि घुमिछा ।
'हंसुका' जस गोंमज 'मनखी' कां आनी ॥ पाली पछौं ...॥

शंकरसिंह चौहान गौं का 'प्रधान'।
मंगलसिंह बंगारि यां क महान।
कौलेजम 'मोहन' यां कैं छू ज्वान।
यांक रामलाल 'चौधरि' जेवर बनानी ।। पाली पछौं ...॥

● ● ●

'मैनोई' दाज्यू क्वे छैं यस मन्तर।
की जैल टांकिनि आसौं का बन्धर।
'श्यव' गौर दत्तैल दुःख झाड़ी घर-घर।
गौं दुःख देखण हर-शंकर ज्यु आनी ।। पाली पछौं ...॥

● ● ●

डोट्याल बै रोड़ मानिला-मरचुल।
हिटौ मौलेखाल पजै में बतुल।
'सल्टा' बिलोका क सब अप्सरा ठुल।
मोहनसिंह 'परमुख' छै जानी-मानी ।। पाली पछौं ...॥

● ● ●

सन बय्यालीसै कि चलिछि आंधी।
हरगोबिन्द पन्त बण 'सल्टम' गांधी।
'सल्टक' शहीदौंकि ढै! में समाधी।
यौ छू! खुमाड़ौक 'गौं' बलिदानी ।। पाली पछौं ...॥

क्य लगौं कहाणि कौं इतिहास।
यां लै रै बीरौंकि नामों कि रास।
अब नाम याद आनी लागौं 'निसास'।
यां खूनैं बत्ति कै फूल ! चड़ानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

यौ लैनम अब रौंछ सल्टौक 'राजा'।
हयातदा ! डाक्टर गंगादत्त कां छा ?
'घन्दा उपाध्याय' लखनऊ मां जा।
'हरदत्त' डोबै स्यारि 'देवायल' जानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

पै लेखुल सल्टै हैं जब घड़ि आली।
'मानिलै-डानि' ऊघड़ि अफि ल्याली।
विकासै-लहर नौली-उज्याली।
मैहनत ! करी बेर दिन पल्टि जानी ॥ पाली पछौं ॥

● ● ●

सल्टा मैं तेकणि ढोक ! नवानू।
कवि 'कुमइयां' ज्युकि 'आशीष' चानू।
कवि निछौं भट्ट ज्यू पर थवड़ गानू।
कां 'मडुवा' राजा कां बाछी की घानी ॥ पाली पछौं···॥

हिनौला ! ढै बटि 'छतेड़' पार ।
दाड़िमि पिपन झिपै कि स्यार ।
'झीपा' इस्कूलौक मैनजरि भार ।
आजादी सेनानि 'बिणदेव' उठानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

प्रेम बल्लभ ठयकदार यौ धारै रौनी ।
यौ धार 'हरक राम' बीरों में औंनी ।
यक-मेल है बेर ये ! धारक रौंनी ।
'नेग्यौ दुकानम बै 'गल्ला' उठानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

ये ! धार 'तारदत्त' रेडू बजांछी ।
दाड़िमि 'बालदत्त' गीत गहांछी ।
मैंल ! द्यखौ बम्बइ रूपैं कमाछी ।
कौण क्या जब ! हनुमान 'जोकर' हे जानी ॥पाली पछौं ॥

● ● ●

तड़ी-बितड़ि बै यौ ! सोली' तका
चम्कना डभर बिनौली परया ।
नैंकण-व्यड़खुन छिड़ा-चांच का ।
'बोहौरा खिल' तक पारै-धारम आनी ॥ पाली पछौं···॥

मानिला देघाट गाड़ि यां ! जैं छा ।
चौकोटा सयाण ! सब्बौं सुणी छा ।
जंग बहादुरसिंह ज्यु ! भुमिछा ।
जसवन्तसिंह 'परमुख' ज्याणी-पछयाणी ॥पाली पछौं···॥

● ● ●

महरोलि-चचरोटि ढिका-बंसारी ।
सराई खेत तक कनकोटैं स्यारी ।
ग्वाई ढै ! अराड़ि नैला गरस्यारी ।
'मोतीराम सनवाल' अब कां पड़ानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

यौ लैन पचपौला चित्तौड़-खाल ।
यौ ! सारै इलाक छौ गढ़वाल ।
लागिछ इनरि पैंठी ! डुटयाल ।
यौ ! लैनमा आजि 'खेचर' जानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

डुटयालौ 'बाजार' थानक तली ।
देवि की दयालै भौल रौ चली ।
च्या-चुड़ी मिठै वै चणा-मुफली ।
पटगड़ी ! सब चीज यां बे ल्हिजानी ॥ पाली पछौं···॥

कौंसा-झाली बटि बदरा-टिल तका ।
थानों ! कौ कलष ! यौ रौतू ढै छा ।
देखौ ! परमदाक गढेरी ठ्यका ।
नौरतम ज्यू प्यांजै कैं गरखका खानी ॥ पाली पछौं...॥

● ● ●

भुलबगड़ सोबनि दा ! यौ द्यखौ ढइया ।
यौं छैं भगवानसिंह 'गांगी' का भइया ।
सभापती गिरि भलि छू चलइया ।
यां कै छैं खिमसिंह पण्डित ज्यू ज्ञानी ॥ पाली पछौं ॥

● ● ●

दिल्लिक होटल 'बैंगार' बटी ।
यौ बागि ! बंगारी एति रौ डठी ।
मिठै कारीगर लोगों में छंटी ।
युँ ! मिठै लम्बर एक बनानी ॥ पाली पछौं...॥

● ● ●

भगोतिदा ! म्यहौंणि च्या बणा चट्ट ।
कां मिलौं 'आदर्श' गाड़ी-टिकट ।
न मुया मिल जाल ! आ थ्वड़ भैट ।
गाड़ि पारि देर छौ पिन्चर ! लगानी ॥ पाली पछौं...॥

Scanned with CamScanner

नान-छना बटिकौ म्यरौ दगड़ी ।
'चन्दन बाबु' यु छैं हो 'नगतुरा' रणी ।
सागैकि दुकान किराय मुणी ।
अम्बीदा ! दगड़ डन-डनै आनी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

परम दा न्है गछै ! अब कठपतिया ।
डुटयालैं ! रै गईं रुपैं ख्यतिया ।
जब मौक लागौल ऊ ! चीज दिया ।
जो लुकै तुमुल ! कठपती छानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

डौई दा ! राम-राम कौ भई राणा ।
'मानिला होटल बै ज्याण-पछयाणा ।
क्य गाछी 'नौघरी' क्य छी ऊ ! गांणा ।
लिली बाकरी या छ्यू-छ्यू लगानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

बिशुदा ! कां छैं हो 'जगदीश-मामा' ।
जब गीत गानू में ऐ जैंछ फामा ।
उं ! हौंनी रावण मैं हौंनू रामा ।
'मेरो बली सुत ! मिठौ ! गहानी ॥ पाली पछौं···॥

यौ कुन्दन बाबू ! चुंगी काटुंछा ।
कै बखा लिसक टीन छाटुंछा ।
मुन्शी ज्यू दगड़ दाम ठुंगुछा ।
जब नि ऐ क्वे गाड़ि जंगल घुम्यानी ॥ पाली पछौं ...॥

● ● ●

'फोरेस्टर काण्डपाल' ज्यु कां-गी ! खिमसिंह ।
विकि याद कौं रछी बम्बई 'भिमसिंह' ।
गुम्टी में मास्टर 'ललीत-सिंह' ।
कौं रछी 'खिम्दा' ले भौत देखी ! डांनी ॥ पाली पछौं ...॥

● ● ●

सुबदार सेबौं कौ संदेश-ऐ रौ ।
मटेला थान ! कैं किर्तन ठरै रौ ।
गरस्यारी बाबा ज्यू 'तारदत्त' बुलै रौ ।
'नन्दन' शाकरख्वल छ ! को बुलै-ल्यानी ॥ पाती पछौं ...॥

● ● ●

जो बांकी दुकान 'डुट्याल' छन ।
क्य नौ ! ल्येखौं मैं जो नौ निबतन ।
सब जी-हैं ! जो लै छैरैं सनातन ।
याद छैं मकैं जो 'च्यहा' प्यवानी ॥ पाली पछौं ...॥

किचारा बामण थान । देखणी ।
'जोकर' खिम्दा लै छैं यां कैं रहणी ।
प्रेम बल्लभ-रामदत्त ज्योणनि मकणी ।
लछमदत्त गुरू ! छिया अब यां ! पड़ानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

डन-डनै बाटिम खेरि निपिड़ानी ।
चौं कौनी जो एति घुमणा आनी ।
चांजै कि 'जड़ी' कौ पाणी पिजानी ।
रसिल काफलौं ! चखा उड़ानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

यौं ! शोवका डाइ यौं देवदार ।
चांजैकि डायोंक भरी भनार ।
पिरूल में घुसि-घुसि ख्यलणौ बहार ।
यौं द्यखौ ग्वाल नन वैं-च्वैं चलानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

यौं लाल बुरूंसि क रुपसा फूला ।
जोभन जवानिम ख्यलहौं भूला ।
द्यखौं यौं डाइ कैहैं मत्था पुजुला ।
यौं द्यखौ घस्यर कौस खित-खितानी ॥ पाली पछौं···॥

राज-खरकाक तली 'बंग्यला' ।
यां बच्यालीसक आन्दोलन चला ।
क्ये-क्ये यां ग्वरौंल खेल निख्यला ।
यां शहीदों हौंणी ढोक ! नवानी ॥पाली पछौं...॥

● ● ●

स्वार्थै कि चलिया छू संसारा ।
द्यप्तों बै नर-तक सब एकै-सारा ।
हे देवी भवानि यु ! त्यरा द्वारा ।
सब्बुहैं ! खुली छै जो एती आनो ॥ पाली पछी...॥

Scanned with CamScanner

मैं छौं हिरू : : !

डढोइ मोहनसिंह ज्यु ! को ना-नौ ।
हीरासिंह राणा मैं कां-कां निगानौ ।
दिल्लि बै बम्बइ कां कां निछानौ ।
तब आनौ ! पहाड़ ! जब तु बुलानी ॥ पाली पछौं ...॥

● ● ●

हरकसिंह ज्यठ-बौज्यू ! कमलासिंह कक छी ।
द्वी ! बैणी बौज्युक ! पखारम 'नग' छी ।
बौज्यू ! कौ 'मवकोट' मनस्यौं ! बखव छी ।
म्यर मवकोटि 'तहयाक' डढेरि कवानी ॥ पाली पछौं ...॥

● ● ●

बचेसिंह राना ज्यू ठुल बौज्यू च्यल छैं ।
पितरों का ठौरम म्येसिला भल छैं ।
घामः लटिकि गोछ ! दाज्यू ! यु म्यल छैं ।
ढारसौं ! 'पन्दा' जस कौतक्यर कां आनी ॥पाली पछौं ...॥

Scanned with CamScanner

नानी अकल जब है गे जवान।
बिगर 'व्या' मैल सौ बट छान।
कै हैं कौंनी घर ! के रौंछी ध्यान।
दूर ! बै चानै रै 'डनैकि छानी' ॥ पाली पछौं ...॥

● ● ●

यौ डनै छानी लै 'गौं' की देई छा।
आधू जग 'भट्टड' कि लोगों लेई छा।
धौ ! लागौ एक खान रात ! बेई छा।
'खत' में दौलती दा लै झमकै दी 'खानी' ॥पाली पछौं ...॥

● ● ●

मैंबू ! म्यर थ्वड़ दिन गोठ ! रहई।
पै ! मकैं 'डनैकि छानि ल्हि गई।
एक कुण हम ! एक भैंस रहई।
बौज्यू ! गरीब छी पर छिया 'ज्ञानी' ॥ पाली पछौं ...॥

● ● ●

बौज्यू हैं दिहणी फीस निरैगे।
इस्कूलम ननाकि मिटिंग हैगे।
द्वी-द्वी डबलौं की 'फीसा' ठड़यै-गे।
धौ ! आठ तक मैल नापिछ डानी ॥ पाली पछौं ...॥

दिल्लि आयूं मैल पड़ौ ! पहाड़ ।
गीदों में सुणैंछ पहाड़ै 'डाड़' ।
घखुनू अपु ! कैं 'बुकिली' झाड़ ।
मथ है गे उमर को मुख लगानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

इस्कूला टैमक पंडित ! नना ।
रनी आजी तक म्यरा 'हियना' ।
एक छी 'डर्बिया' गौंछी रिस्टना ।
जो अबा 'इन्टर' मज़ि पड़ानीं ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

जोगिया रामुवां किसना किसनि ।
मधिया खिमुवां टिकुवा भन पनि ।
नरि गुसैं शंकर डिकरि सोबनि ।
ओ ! धना बताधैं के हैं जवानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

कलमा उठण मज आज ! म्यरौ मन ।
फिरि खेलूं गिनुवां कराई दै पन ।
अपर-मिडिलम 'हम' भौत्तै छी नन ।
कान्तुलि दि ! जीबन्ति द्वीयै छी नानी ॥ पाली पछौं···॥

Scanned with CamScanner

मे दगा पड़िया ! पुजिगीं दूर ।
आज ! लै नै मकैं सीप-सहूर ।
सब्बौं ! कौ आभारि छौ मैं 'बिरुड़' ।
जानै रैं 'उमरा' दिन कां आनी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

जेलै मिल मेकणि फाटौ पुराणौ ।
भरीया मनैल 'इस्कूल' जाणौ' ।
बौज्युलै आंख्यौंमा 'पाणी' लुकाणौ ।
न्है गी बौज्यू पर 'याद' ऐ जानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

इजै हैं क्वे ! यस आंखर निछैं ।
जनौल इनिका 'गुणा' लेखी जैं ।
गोठ बै छानि तक्का ! दिना देखी छैं ।
जै हो ! इजा ! तेरि मेरी भवानी ! ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

छै भाई छौं हम चार छौं ज्वान ।
द्वी भाई छवट छैं इस्कूली नान ।
या सांचि ठारौ या ठारौ या ठारिल्यो शान ।
फीस आजी तक नी जुटि पानी ॥ पाली पछौं···॥

अजकाल दिल्ली में काम करूनू।
आइ० एन० ए कैम्पक भुग्गिम रूनू।
अपणै पहाड़ि गीद ल्य-खुनू।
हैंसी-गैहै बेर जुग काटी जानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

परदेश मकैं जी भल मैंस मिलीं।
पोछी ! जनुल मेरि गालड़ी गिली।
सुणी ! जुनुल मेरि आलिलि लिली।
ध्वड़-भौत्तौं 'जिगर' कुंल सानी-सानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

अब छैं 'उर्जा मंत्री' श्री के० सी० पन्त।
युं ! जुग जी रैं हो वर्ष अनन्त।
दुनियमम् यस 'च्यला' हौंनी हो चन्द।
जो बौज्यू ! 'नौं' कणि उच्चौ कै जानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

नरेन्द्र सिंह बिष्ट ज्यू 'एम० पी० छैं। म्यरा।
जंग बहादुर सिंह है ! सकरा।
'जामणि' कुलानन्द 'भारती' घरा।
कै-कै ध्यां जानू मैं ! कां मिलि पानी ॥ पाली पछौं···॥

गोबिन्द सिंह मैहरा ज्यू एम०एल०ए० हैगी ।
'मैहरा गौं' बै 'स्प्रिंग' फिल्डमा ! न्हैगी ।
पूरन ! अपण ! पूरणा हैगीं ।
हिरदा ! अगासक 'पंछि' कवानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

पालिका डाक्टर एन०डी० 'पल्याव' ।
यु ज्यांणनी थ्वड़ म्यर उमाव ।
जब देखनी थ्वड़ खर्चों कौ ढाव ।
पै ! कौनी ऐल्ले ! जा मानिलै डानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

डाक्टर सैबौं कणि सब्बै ज्याणनी ।
कुमाउंनी बोलिक यु छैं 'पाणिनी' ।
हिरदा ! हिरदी पीड़ झाड़नी ।
म्यर पहाड़ि गीतों कि हिन्दी बनानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

टम्टा ज्यू पुर नौंछ 'बहादुरराम' ।
कैल ! मकैं निपुछौ इनुलै थाम ।
डाक्टर अम्बेदकरक श्रेणी ! में नाम ।
गणमान्य 'पुरुषों' में यु ! गणी जानी ॥ पाली पछौं···॥

ऐ दिन बैं निगम में प्रकाशक आई।
झुग्गि-झोपड़ियों कि करि दि सफाई।
बीस सूत्री कार्यक्रम भल अपनाई।
यु ! अबा दिल्लि कैं पेरिस बनानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

सेठ भवानिदा कैं ! कुट्टि की 'रट्ट'।
पी०सी जोशी खानि मोडर्न 'ब्रड'।
अल्मोड़ा ग्राम कमेटी का 'भट्ट'।
सामाजिक कामम भुक्कै रै जानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

एैम०एैस० मैहरा ज्युकि 'समाचारौं' चल।
ख्यालि ! बी०डी०शर्मा ज्यू चलानी होटल।
खिमसिंह किरौला ज्यू ! कां गेऊ ! दाङल।
जब बची मोहन कौंछी ! नचानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

आनन्दसिंह कमाउंनी सिलोरा रौणी।
प्रसिद्ध पहाड़ि गीत गहौंणी।
जल्लै मिली रोज कौछ मिहौंणी।
राणा ! कलाकारों धौ ! दिन आनी ॥ पाली पछौं···॥

उप्रेति ज्यु ! कैं देख ! के हैरैं हाल ।
छैं ! जो पहाड़ैकि एक 'मिशाल' ।
लोककला कारि लै करी बिहाल ।
अब ! कला केन्द्रम 'कत्थक' नचानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

'देवीदत्त हुड़की' बटि देवी ! केदार ।
हौई पहाड़म भौत्तै 'गिदार' ।
घुन टेकी नाचनि ! एक कलाकार ।
बौड़ा रौ पट्टिकौ रौता ! 'गुमानी' ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

'पट्टी' अठागुलिक मोहन ! भन्डारी ।
ल्यै ! रौ पहाड़ैकि लोक कलाकारी ।
कैक हात् हुड़कौ कैक हात दुतारी ।
खिचड़ी पुरा ! पन 'मैफल' जमानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

धाकड़ 'मैसों' में मानियां पैक ।
धरनोलि लछमसिंह 'कन्डारी' सैब ।
'कमला' दिदि त्विल बणाई नेक ।
दि मकैं शरण ! जी ! रौ 'दिवानी' ॥ पाली पछौं···॥

तड़खेत शिबदत्त पपने ज्यू 'नेता'।
मे दगै दिल्लिम छी अभिनेता।
यौं छैं खासै ! म्यर आपत-हेता।
मैं गीत गानू युं ! हुड़कौ बजानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

भौत्तौं कै दगड़ ज्वड़छ जन्त।
गीत क्या ! बौलिकौ ! ऐ गोछ अन्त।
पहाड़ा 'गिदर' सबुकी कन्थ।
दम भरि बेर लै दम टोड़ी जानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

क्य लेखौं ! को छापौं ! युं म्यर गीत।
को लगां डबल स्वचनु ! भित।
जब 'चिन्तामणि कवि' हैरैं फजीत।
को म्यर गीतों कैं ल्यखा लगानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

ध्वड़ै ! लेखी रैछ लागी भिजिया।
हे ! मानिल देवि यौ ! त्यौ लिजिया।
भौत्तै ! दिना बै छी 'राणा' भिजीया।
बत्तिल सुणि हे देवि म्यर मनै घानी ॥ पाली पछौं···॥

मेकणि जैल-जैल देछ सहार ।
अड़ोस-पड़ोस भितेर भ्यार ।
नौक ! निमानौण म्यर गीत पार ।
न्है जानी गिदर ! गीत ! कां जानी ॥ पाली पछौ···॥

● ● ●

प्रताप सिंह नेगी ज्यू यौ ! झुग्गी बल्यै ।
यौ झुग्गी 'तब' मैल कलम चलै ।
जी रया किताब चलालि जंलै ।
यां ! फिरि याद ऐ 'डनैकि छानी' ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

अन्त में 'शंकर' त्यर छौं आभारी ।
त्विल दि हौंसल जब हौंसल हारी ।
मानिल कैं तेबटि आशा छू भारी ।
चै ! रै भुला ! त्यकैं मानिलै डानी ॥ पाली पछौं···॥

● ● ●

महाविद्यालय निर्माण समिती ।
भौल कौ छापैं हैणि सहमति दिदी ।
जाधे क्य लेखुनु सब्बु पारि बिती ।
हिरदा ! की 'क्षितिज' ज्याणौं कहाणी ॥ पाली पछौं···॥

॥ इति श्री :—

घानि बाजीगे.....

(बीस सूत्री कार्यक्रम पर आधारित कुमाउ'नी गीत)

ले० हीरासिह 'राणा'

सारै देशमा घानि बाजीगे,
बाजिगे टनाटन् ।
बीस-सूत्री कार्यकरमा,
धन इन्दिरा धन् ।
भूमि-हीनों कै जग मिलली,
भुक-प्यासौं कैं अन्न् ।
(इन्दिरा) ज्यू कौ 'समाजवाद',
रै है जो सनातन् ।

अ०—बड़े टनाटनी हैरै हिरदा ! तुमरि,
क्य कमै गरीबौं लिजी सरकार हमरि ।
बीस सुमीप-कार्यक्रम के रई धरि,
'इन्दिरा' धन् इन्दिरा धन् ॥

उ०—सबौं हेबेर पैल काम दाम कौंणी कम,
बिरुजगारी जतु लै छौ करणी ।
सरकारी खरच कणी, कम करौणौ कम,
'हो बली' धन् इन्दिरा धन् ॥

जत् लै छौ देश मत्रा खेति लैक जग।
उकणी कमिन कौंण पुत्रियौ जौं तक।
बांटणी उन्दुकै जैहैं, नै जिमि नै जग।
'इन्दिरा' धन इन्दिरा' धन।

प्र०—हिरदा हो मनि गोयू' मैं तुमरी बात।
यौ'करान्ती'आई रैछ इन्द्रा ज्यू प्रसाद।
सबुकैं जै मिलली, या जैक लामौ हात,
'हो बली' धन इन्दिरा धन।

उ०—सरकारै लै ठानि रैछ सब्बुकैं उठाणौ।
गरीबा-गुरिबौं कणी कर्ज बै छुटाणौ।
झुग्गी झुपड़ि कणी भल ठौरा बसाणौ।
'इन्दिरा' धन इन्दिरा धन॥

अरगै देशम लै रै सब कारी-बरि।
बिजुली पाणिक ल्हिजी योजना छैं भारि।
गौंनुमें बिजुलि जाली, पाणी स्यारी-स्यारि।
'होब ली' धनइन्दिरा धन॥

क्रमशः कृपया देखें

(इन्द्रा गांधिक बीस बात)

पुस्तक में

(पृष्ठ ३३'से ६४ तक) त्यागी फाइन आर्ट प्रेस,
बिनारी बाजार दिल्ली-११०००६ में मुद्रित।

Scanned with CamScanner

कुमाँचल के नवोदित गीतकार श्री हीरासिंह राणा, पर्वतीय रंग-मंच के जाने माने लोकप्रिय कवि भी हैं कलाकार भी, इनकी क्षेत्रीय रचनायें, जन-जन की भावनाओं की सुन्दर प्रतीक हैं। 'राणा जी' की लोकप्रिय रचनाओं में 'मानिलै डानि' एक अनूठी रचना है मानिला में ही जन्मे कवि श्री राणा आजकल कुमाउंनी साहित्य मण्डल (दिल्ली) में साहित्य सेवा कर रहें हैं।

'प्रकाशक'

तुम गया पर मैं कथां जौं ? होय
तो ! आखर 'कौथिको थो' मैं ॥